

मोक्ष की प्राप्ति

मनप्रीत सिंह संधू

मोक्ष का अर्थ होता है मुक्ति। लेकिन अधिकतर लोग यह समझते हैं कि मोक्ष का अर्थ जीवन-मरण के चक्र से मुक्ति है। कुछ लोगों का यह मानना है कि अच्छे कर्म करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। कुछ कहते हैं कि मोक्ष के बाद व्यक्ति शून्य हो जाता है, अंधकार में लीन हो जाता है या संसार से अलग हो जाता है। मोक्ष एक ऐसी दशा है जिसे मनोदशा नहीं कह सकते। इस दशा में न मृत्यु का भय होता है न संसार की चिंता। सिर्फ परम आनंद, परम होश, परम शक्तिशाली होने का अनुभव। इसी में परम शक्तिशाली होने का बोध छुपा है, जहाँ न भूख है न प्यास, न सुख न दुःख, न अन्धकार न प्रकाश, न जन्म है न मरण और न किसी का प्रभाव। हर तरह के बंधन से मुक्ति ही मोक्ष है केवल जन्म और मरण से मुक्ति ही मोक्ष नहीं है। ध्यान को छोड़कर अभी तक कोई ऐसा मार्ग नहीं खोजा गया है जिससे समाधि या मोक्ष पाया जा सके। लोग भक्ति की बात आवश्यक करते हैं लेकिन भक्ति भी ध्यान का एक प्रकार है।

मोक्ष शब्द की व्युत्पत्ति मुच धातु से त्यागना अर्थ में हुई है। इसी कारण, मोक्ष का अर्थ मृत्यु से लिया जाता है। किन्तु दर्शन शास्त्र इससे नितांत पृथक परम शांति और आनंद की अवस्था को मोक्ष कहता है। मोक्ष का अर्थ छुटकारा पाना होता है। अध्यासजन्य मिथ्याबंधन से छुटकारा पाने का नाम मुक्ति है। मोक्ष का अर्थ जन्म और मरण के चक्र से मुक्ति के अतिरिक्त सर्वशक्तिमान बन जाना है। प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी प्रकार की मुक्ति चाहता है, बंधनों से मुक्ति या दुखों से मुक्ति, जेल से मुक्ति या दवाखाने से मुक्ति, परेशानी से मुक्ति या दिमागी उलझनों से मुक्ति। मनुष्य होने का मतलब यह है कि हम लोग पशु या पक्षी की योनी से मुक्त हैं।

भक्ति : भक्ति भी मुक्ति का एक मार्ग है। भक्ति भी कई प्रकार की होती है। इसमें श्रवण, भजन-कीर्तन, नाम जप स्मरण, मंत्र जप, पाद सेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य, पूजा-

आरती, प्रार्थना आदि शामिल है। इस तरह यह भी मानव मुक्ति के लिए ही करता है भक्ति मुक्ति का एक मार्ग है।

योग : योग अर्थात् मोक्ष के मार्ग की सीढियाँ, पहली यम, दूसरी नियम, तीसरी आसन मुद्रा, चौथी प्राणायाम क्रिया, पांचवी प्रत्याहार, छठी धारणा, सातवीं ध्यान, आठवीं और अंतिम समाधि अर्थात् मोक्षा।

ध्यान : ध्यान का अर्थ शरीर और मन तन्द्रा को छोड़कर होशपूर्ण हो जाना। ध्यान कई प्रकार से किया जाता है। इसका उद्देश्य साखीभाव में स्थित होकर मोक्ष को प्राप्त करना होता है। ध्यान जैसे-जैसे गहराता है, व्यक्ति वैसे ही साखीभाव में स्थित होने लगता है।

तंत्र : मोक्ष प्राप्ति का तांत्रिक मार्ग भी है। इसका अर्थ है कि किसी वस्तु को बलपूर्वक हासिल करना। तंत्र भोग से मोक्ष की ओर गमन है। इस मार्ग में कई तरह की साधनाओं का उल्लेख मिलता है। तंत्र मार्ग को वाममार्ग भी कहते हैं। इसको गलत अर्थों में नहीं लेना चाहिए।

ज्ञान : साक्षीभाव द्वारा विशुद्ध आत्मा का ज्ञान प्राप्त करना ही ज्ञान मार्ग है। ईश्वर, जीवन, ब्रह्मांड, आत्मा, जन्म और मरण आदि के प्रश्नों से उपजे मानसिक द्वंद्व को एक तरफ रखकर निर्विचार को ही महत्व देंगे, तो साक्षीभाव उत्पन्न होगा। वेद, उपनिषद और गीता के श्लोकों का अर्थ समझे बिना यह संभव नहीं है।

कर्म और आचरण : कर्मों में कुशलता लाना सहज योग है। इनका पालन करके कोई भी मानव अपने जीवन में सुख और जीवन के बाद मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

सत्य, सच्चाई और मोक्ष

जीवन में सत्य का बहुत महत्व है। हम उन्हीं व्यक्तियों को पसंद करते हैं जो सदैव सत्य बोलते हैं। झूठे और मक्कार लोगों को कोई पसंद नहीं करता। हमारे देश का कानून भी सत्य पर ही अपना फैसला देता है, जब किसी बात पर विवाद होता हो अदालत में जज भी यही पूछता है की सत्य क्या है, इसलिए सत्य का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। शास्त्रों में कहा गया है कि सत्य का मार्ग धर्म का मार्ग होता है। महाभारत के युद्ध में पांडवों की जीत इसलिए हुई थी क्योंकि वह सत्य का मार्ग अपना रहे थे। सत्य का मार्ग धर्म का मार्ग कहा जाता है, इसे अपना कर जीत प्राप्त की जा सकती है। सत्य हमेशा कड़वा होता है, कुछ लोग तो सत्य देखना ही नहीं चाहते वह तो बस अँधेरे में जीना चाहते हैं। वर्तमान में ऐसा ही होता

है किसी को सत्य नहीं देखना है। एक पिता या भाई को अपनी बहन की शादी अच्छे घर में करनी होती है जिसके लिए उसे दहेज देना होता है यह सत्य है, लड़के वाले खुशी-खुशी दहेज प्राप्त कर लेते हैं। लेकिन जब उनको अपने लड़की की शादी करनी होती है तो वह दहेज की निंदा करते हैं यह भी सच है। सभी को अपना स्वार्थ देखना है किसी को सत्य से मतलब नहीं है इसी कारण हम वर्तमान में बहुत सी समस्याओं में घिरे हुए हैं। इन समस्याओं से छुटकारा पाया जा सके तांकि आने वाले समय में हम इन समस्याओं से बच सके। हमें केवल स्वार्थ को लेकर नहीं चलना होगा सत्य और सच्चाई का मार्ग अपनाना होगा इसी से मोक्ष की प्राप्ति भी होती है।

बहुत बार व्यक्ति इतना भ्रमित हो जाता है की सत्य की पहचान तक नहीं कर पाता। जब उसे असफलता और भटकाव महसूस होता है तब वह सत्य की पहचान कर पाता है। जो लोग ईमानदार है वह सदैव सत्य बोलते हैं। जो लोग झूठे, बेईमान और मक्कार होते है वह हमें ऐसे मक्कार और झूठे लोगो से बचना है जो अपने स्वार्थ के लिए असत्य बोलते हैं। सत्य का साथ देना बहुत कठिन है व्यक्ति अनेक बन्धनों में बंधा होता है। वीर पुरुष लोग ही सत्य के मार्ग पर चल पाते हैं। यह मार्ग इतना कठिन है की हर किसी के बस की बात नहीं है इस मार्ग पर चल पाना। लेकिन हमें ज्यादा से ज्यादा कोशिश सत्य पर चलने की करनी चाहिए तभी हम मोक्ष की प्राप्ति कर सकते हैं। सत्य के मार्ग पर चलकर व्यक्ति को आत्म संतुष्टि मिलती है और मोक्ष और यश प्राप्त होता है।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें

